गद्‌य

5

घुमक्कड़ जिज्ञासा

– राहुल सांकृत्यायन

लेखक परिचय

महापंडित राहुल सांकृत्यायन विश्वविख्यात विद्वान और लेखक थे। बचपन में उनका नाम केदारनाथ पाण्डे था और परिव्राजक बनने पर राम उदारदास कहलाये। काशी और तिरुमळिशै (तमिलनाडु) आदि स्थानों में संस्कृत का अध्ययन किया, पीछे बौद्ध धर्म में राहुल सांकृत्यायन नाम से दीक्षित हुए तथा श्रीलंका जाकर त्रिपिटकाचार्य की उपाधि प्राप्त की। वह बहु-भाषाविद और जन्मजात घुमक्कड़ थे। घुमक्कड़ी के दौरान में भी उनकी लेखनी अविराम गति से चलती रही थी। ढेरों पुस्तकें उनकी प्रकाशित हो चुकी हैं। यात्रा, कहानी, उपन्यास से लेकर दर्शन-विज्ञान, राजनीति तक- प्रायः हर विषय पर उन्होंने अपनी लेखनी चलायी थी। संसार के अधिकांश हिस्सों की यात्रा कर चुके थे।

‘घुमक्कड़ी शास्त्र’ नामक पुस्तक में राहुलजी ने घुमक्कड़ी का शास्त्रीय विवेचन किया है, और इस प्रकार उन्होंने जैसे एक अभिनव ‘शास्त्र’ की ही रचना कर डाली है। निस्संदेह उससे भावी घुमक्कड़ों को बड़ी प्रेरणा मिलेगी और साथ ही मार्गदर्शन भी मिलेगा।

प्रस्तुत लेख उसी पुस्तक का प्रथम अध्याय है। प्राचीन काल से ही उदाहरण देते हुए लेखक ने उसमें घुमक्कड़ी की महिमा और उपयोगिता समझायी है और यह सिद्ध किया है कि मेधावी घुमक्कड़ों से मानव-समाज का बड़ा कल्याण होता है।

संसार रूपी पुस्तक में ही संपूर्ण ज्ञान निहित है। और मनुष्य की ‘घुमक्कड़-जिज्ञासा’ इस ज्ञान को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। मानव जाति का इतिहास इस बात का गवाह है कि उसके समस्त ज्ञान एवं विकास का मूल आधार यह ‘घुमक्कड़ जिज्ञासा’ ही थी। इतिहास यह सिद्ध करता है कि किसी भी देश या जाति के पतन का मुख्य कारण ‘घुमक्कड़ जिज्ञासा’ का अभाव ही था। यह पाठ पढ़कर आप स्वयं निर्णय कीजिए कि ‘घुमक्कड़ जिज्ञासा’ हमारे लिए कितनी ज़रूरी है।

शास्त्रों में जिज्ञासा ऐसी चीज़ के लिए होनी बतलायी गयी है, जो कि श्रेष्ठ हो तथा व्यक्ति और समाज सबके लिए परम हितकारी हो। व्यास ने अपने शास्त्र में ब्रह्मा को सर्वश्रेष्ठ मानकर उसे जिज्ञासा का विषय बनाया। व्यास-शिष्य जैमिनी ने धर्म को श्रेष्ठ माना। पुराने ऋषियों से मतभेद रखना हमारे लिए पाप की वस्तु नहीं है। मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी। घुमक्कड़ी से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं हो सकता। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि को पैदा, धारण और नाश करने का ज़िम्मा अपने ऊपर लिया है। पैदा करना और नाश करना दूर की बातें हैं, उनकी यथार्थता सिद्ध करने के लिए न प्रत्यक्ष प्रमाण सहायक हो सकता है, न अनुमान ही। हाँ, दुनिया के धारण की बात तो निश्चय ही न ब्रह्मा के ऊपर है, न विष्णु के और न शंकर ही के ऊपर। दुनिया – दुख में हो, चाहे सुख में – सभी समय यदि सहारा पाती है, तो घुमक्कड़ों की ही ओर से। प्राकृतिक आदिम मनुष्य परम घुमक्कड़ था। खेती, बाग़वानी तथा घर-द्वार से मुक्त वह आकाश के पक्षियों की भाँति पृथ्वी पर सदा विचरण करता था, जाड़े में यदि इस जगह था, तो गर्मियों में वहाँ से दो सौ कोस दूर।

आधुनिक काल में घुमक्कड़ों के काम की बात कहने की आवश्यकता है, क्योंकि लोगों ने घुमक्कड़ों की कृतियों को चुराके उन्हें गला फाड़-फाड़कर अपने नाम से प्रकाशित किया, जिससे दुनिया जानने लगी कि वस्तुतः तेली के कोल्हू के बैल ही दुनिया में सब कुछ करते हैं। आधुनिक विज्ञान में चार्लस डारविन का स्थान बहुत ऊँचा है। उसने प्राणियों की उत्पत्ति और मानव वंश के विकास पर ही अद्वितीय खोज नहीं की, बल्कि सारे विज्ञानों को उससे सहायता मिली। कहना चाहिए कि सभी विज्ञानों को डारविन के प्रकाश में दिशा बदलनी पड़ी। लेकिन क्या डारविन अपने महान आविष्कारों को कर सकता था, यदि उसने घुमक्कड़ी का व्रत नहीं लिया होता?

मैं मानता हूँ, पुस्तकें भी कुछ-कुछ घुमक्कड़ी का रस प्रदान करती हैं, लेकिन जिस तरह फ़ोटो देखकर आप हिमालय के देवदार के गहन वनों और श्वेत हिम-मुकुटित शिखरों के सौंदर्य, उनके रूप, उनकी गंध का अनुभव नहीं कर सकते, उसी तरह यात्रा-कथाओं से आपको उस बूँद से भेंट नहीं हो सकती जो कि एक घुमक्कड़ को प्राप्त होती है। अधिक से अधिक यात्रा-पाठकों के लिए यही कहा जा सकता है कि दूसरे अन्धों की अपेक्षा उन्हें थोड़ा आलोक मिल जाता है और साथ ही ऐसी प्रेरणा भी मिल सकती है, जो स्थाई नहीं, तो कुछ दिनों के लिए उन्हें घुमक्कड़ बना सकती है। घुमक्कड़ क्यों दुनिया की सर्वश्रेष्ठ विभूति है? इसीलिए कि इसी ने आज की दुनिया को बनाया है। यदि आदिम पुरुष एक जगह नदी या तालाब के किनारे गर्म मुल्क में पड़े रहते, तो वह दुनिया को आगे नहीं ले जा सकते थे। आदमी की घुमक्कड़ी ने बहुत बार खून की नदियाँ बहायी हैं, इसमें सन्देह नहीं, और घुमक्कड़ों से हम हर्गिज़ नहीं चाहेंगे कि वह खून के रास्ते को पकड़े, किन्तु अगर घुमक्कड़ों के काफ़िले न आते-जाते, तो सुस्त मानव जातियाँ सो जातीं, और पशु से ऊपर नहीं उठ पातीं। आदिम घुमक्कड़ों में से आर्यों, शकों, हूणों

ने क्या-क्या किया, अपने खूनी पथों द्वारा मानवता के पथ को जिस तरह प्रशस्त किया, इसे इतिहास में हम उतना स्पष्ट वर्णित नहीं पाते, किन्तु मंगोल घुमक्कड़ों की करामतों को तो हम अच्छी तरह जानते हैं। बारूद, तोप, कागज़, छापाखाना, दिग्दर्शक, चश्मा यही चीज़ें थीं, जिन्होंने पश्चिम में विज्ञान-युग का आरंभ कराया, और इन चीज़ों को वहाँ ले जानेवाले मंगोल घुमक्कड़ थे।

कोलम्बस और वास्को-द-गामा भी घुमक्कड़ ही थे, जिन्होंने पश्चिमी देशों के आगे बढ़ने का रास्ता खोला। अमेरिका अधिकतर निर्जन-सा पड़ा था। एशिया के कूप-मंडूकों को घुमक्कड़-धर्म की महिमा भूल गयी, इसलिए उन्होंने अमेरिका पर अपनी झंड़ी नहीं गाड़ी। दो शताब्दियों के पहले तक आस्ट्रेलिया खाली पड़ा था! चीन और भारत को सभ्यता का बड़ा गर्व है, लेकिन इनको इतना अक़्ल नहीं आयी कि जाकर वहाँ अपना झंडा गाड़ आते। आज अपनी 40-50 करोड़ की जनसंख्या के भार से भारत और चीन की भूमि दबी जा रही है, और आस्ट्रेलिया में एक करोड़ भी आदमी नहीं हैं। आज एशियायियों के लिए आस्ट्रेलिया का द्वार बन्द है, लेकिन दो सदी पहले वह हमारे हाथ की चीज़ थी। क्यों भारत और चीन आस्ट्रेलिया की अपार संपत्ति और अमित भूमि से वंचित रह गये? इसलिए कि वह घुमक्कड़ धर्म से विमुख थे, उसे भूल चुके थे। हाँ, मैं इसे भूलना ही कहूँगा, क्योंकि किसी समय भारत और चीन ने बड़े-बड़े नामी घुमक्कड़ पैदा किये। वे भारतीय घुमक्कड़ ही थे, जिन्होंने दक्षिण-पूरब में लंका, बर्मा, मलाया, यवद्वीप, श्याम, काम्बोज, चम्पा, बोर्नियो और सेलीबीज़ ही नहीं, फ़िलिपाइन तक का धावा मारा था, और एक समय तो जान पड़ा कि न्यूज़ीलैण्ड और आस्ट्रेलिया भी बृहत्तर भारत का अंग बननेवाले हैं; लेकिन कूप-मंडूकता, तेरा सत्यानाश हो! इस देश के बुद्धुओं ने उपदेश करना शुरू किया कि समुन्दर के खारे पानी और हिन्दू धर्म में बड़ा वैर है, उसके छूने मात्र से वह नमक की पुतली की तरह गल जाएगा। इतना बतला देने पर क्या कहने की आवश्यकता है कि समाज के कल्याण के लिए घुमक्कड़ धर्म कितनी आवश्यक चीज़ है? जिस जाति या देश ने इस धर्म को अपनाया, वह चारों फलों का भागी हुआ, और जिसने इसे दुराया, उसके लिए नरक में भी ठिकाना नहीं। आखिर घुमक्कड़ धर्म को भूलने के कारण ही हम सात शताब्दियों तक धक्का खाते रहे, ऐरे-ग़ैरे जो भी आये, हमें चार लात लगाते गये।

शायद किसी को सन्देह हो कि मैंने इस शास्त्र में जो युक्तियाँ दी हैं, वे सभी लौकिक तथा शास्त्रबाह्य हैं। अच्छा, तो धर्म से प्रमाण लीजिए। दुनिया के अधिकांश धर्मनायक घुमक्कड़ रहे। धर्माचार्यों में आचार-विचार, बुद्धि और तर्क तथा सहृदयता में सर्वश्रेष्ठ बुद्ध घुमक्कड़ राज थे। यद्यपि वह भारत से बाहर नहीं गये, लेकिन वर्षा के तीन मासों को छोड़कर एक जगह रहना वह पाप समझते थे, वह अकेले ही घुमक्कड़ नहीं थे, बल्कि आरंभ ही में अपने शिष्यों को उन्होंने

कहा था– 'चरथ भिक्खवे! चारिकं' जिसका अर्थ है– 'भिक्षुओ! घुमक्कड़ी करो।' बौद्ध भिक्षुओं ने अपने गुरु की शिक्षा को कितना माना, क्या इसे बताने की आवश्यकता है? क्या उन्होंने पश्चिम में मकदूनिया तथा मिस्र से पूरब में जापान तक, उत्तर में मंगोलिया से लेकर दक्षिण में बाली आदि द्वीपों तक को रौंदकर रख नहीं दिया?

जिस बृहत्तर भारत के लिए हरेक भारतीय को उचित अभिमान है, क्या उसका निर्माण उन्हीं घुमक्कड़ों की चरण-धूलि ने नहीं किया? केवल बुद्ध ने ही अपनी घुमक्कड़ी से प्रेरणा नहीं दी, बल्कि घुमक्कड़ों का इतना ज़ोर बुद्ध से एक-दो शताब्दियों पूर्व भी था, जिसके ही कारण बुद्ध-जैसे घुमक्कड़ राज इस देश में पैदा हो सके। उस वक्त पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ तक जम्बू-वृक्ष की शाखा ले अपनी प्रखर प्रतिभा का जौहर दिखाती, बाद में कूप-मण्डूकों को पराजित करतीं और सारे भारत में मुक्त होकर विचरा करती थीं।

कोई-कोई महिलाएँ पूछती हैं– क्या स्त्रियाँ भी घुमक्कड़ी कर सकती हैं, क्या उनको भी इस महाव्रत की दीक्षा लेनी चाहिए? इसके बारे में तो अलग अध्याय ही लिखा जानेवाला है, किन्तु यहाँ इतना कह देना है कि घुमक्कड़ धर्म संकुचित धर्म नहीं है, जिसमें स्त्रियों के लिए स्थान नहीं हो। स्त्रियाँ इसमें उतना ही अधिकार रखती हैं, जितना पुरुष। यदि वह जन्म सफल करके व्यक्ति और समाज के लिए कुछ करना चाहती हैं, तो उन्हें भी दोनों हाथों इस धर्म को स्वीकार करना चाहिए। घुमक्कड़ी धर्म से छुड़ाने के लिए ही पुरुष ने बहुत-से बन्धन नारी के रास्ते में लगाये हैं। बुद्ध ने सिर्फ़ पुरुषों के लिए घुमक्कड़ी करने का आदेश नहीं दिया, बल्कि स्त्रियों के लिए भी उनका वही उपदेश था।

भारत के प्राचीन धर्मों में जैन धर्म भी है। जैन धर्म के प्रतिष्ठापक श्रमण महावीर कौन थे? वह भी घुमक्कड़ राज थे। घुमक्कड़ धर्म के आचरण छोटी से बड़ी तक सभी बाधाओं और उपाधियों को उन्होंने त्याग दिया था– घर-द्वार और नारी-संतान ही नहीं, वस्त्र का भी वर्जन कर दिया था। 'करतलभिक्षा, तरुतलवासः' तथा दिग्-अम्बर को उन्होंने इसलिए अपनाया था कि निर्द्वन्द्व विचरण में कोई बाधा न रहे। श्वेतांबर बन्धु दिगम्बर कहने के लिए नाराज़ न हों। वस्तुतः हमारे वैशालिक महान घुमक्कड़ कुछ बातों में दिगम्बरों की कल्पना के अनुसार थे और कुछ बातों में श्वेतांबरों के उल्लेख के अनुसार। लेकिन इसमें तो दोनों संप्रदाय और बाहर के मर्मज्ञ भी सहमत हैं कि भगवान महावीर दूसरी-तीसरी नहीं, प्रथम श्रेणी के घुमक्कड़ थे। वह आजीवन घूमते ही रहे। वैशाली में जन्म लेकर विचरण करते हुए पावा में उन्होंने अपना शरीर छोड़ा। बुद्ध और महावीर से बढ़कर यदि कोई त्याग, तपस्या और सहृदयता का दावा करता है, तो मैं उसे केवल दम्भी कहूँगा। आजकल कुटिया या आश्रम बनाकर तेली के बैल की तरह कोल्हू से बन्धे कितने ही लोग अपने को अद्वितीय महात्मा कहते हैं या चेलों से कहलवाते हैं; लेकिन मैं तो

कहूँगा घुमक्कड़ी को त्यागकर यदि महापुरुष बन जाता, तो फिर ऐसे लोग गली-गली में देखे जाते। मैं तो जिज्ञासुओं को खबरदार कर देना चाहता हूँ कि वे ऐसे मुलम्मेवाले महात्माओं और महापुरुषों के फेर से बचे रहें। वे स्वयं तेली के बैल तो हैं ही, दूसरों को भी अपने ही जैसा बना रखेंगे।

बुद्ध और महावीर-जैसे सृष्टिकर्ता ईश्वर से इनकारी महापुरुषों की घुमक्कड़ी की बात से यह नहीं मान लेना होगा कि दूसरे लोग ईश्वर के भरोसे गुफ़ा या कोठरी में बैठकर सारी सिद्धियाँ पा गये या पा जाते हैं। यदि ऐसा होता, तो शंकराचार्य, जो साक्षात् ब्रह्म स्वरूप थे, क्यों भारत के चारों कोनों की खाक छानते फिरे? शंकर को शंकर किसी ब्रह्म ने नहीं बनाया, उन्हें बड़ा बनानेवाला था यही घुमक्कड़ी धर्म। शंकर बराबर घूमते रहे– आज केरल देश में थे, तो कुछ ही महीने बाद मिथिला में और अगले साल काश्मीर या हिमालय के किसी दूसरे भाग में। शंकर तरुणाई में ही शिवलोक सिधार गये, किन्तु थोड़े-से जीवन में उन्होंने सिर्फ़ तीन भाष्य ही नहीं लिखे, बल्कि अपने आचरण से अनुयायियों को वह घुमक्कड़ी का पाठ पढ़ा गये कि आज भी उसका पालन करनेवाले सैकड़ों मिलते हैं।

वास्को-द-गामा के भारत पहुँचने से बहुत पहिले शंकर के शिष्य मास्को और यूरोप तक पहुँचेथे। उनके साहसी शिष्य सिर्फ़ भारत के चार धामों से ही सन्तुष्ट नहीं थे, बल्कि उनमें से कितनों ने जाकर बाकू (रूस) में धूनी रमायी। एक ने पर्यटन करते हुए वोल्गा तट पर निज़ीनोवोग्राद के महा-मेले को देखा। फिर क्या था, कुछ समय के लिए वहीं ठहर गया और उसने ईसाइयों के भीतर कितने ही अनुयायी पैदा कर लिये, जिनकी संख्या भीतर ही भीतर बढ़ती इस शताब्दी के आरंभ में कुछ लाख तक पहुँच गयी थी।

भला हो रामानन्द और चैतन्य का, जिन्होंने पंक से पंकज बनकर आदिकाल से चले आते महान घुमक्कड़ धर्म की फिर से प्रतिष्ठापना की, जिसके फलस्वरूप प्रथम श्रेणी के तो नहीं, किन्तु द्वितीय श्रेणी के बहुत-से घुमक्कड़ उनमें भी पैदा हुए। ये बेचारे बाकू की बड़ी ज्वालामाई तक कैसे जाते, उनके लिए तो मानसरोवर तक पहुँचना भी मुश्किल था। अपने हाथ से खाना बनाना, माँस-अंडे से छू जाने पर भी धर्म का चला जाना, हाड़-तोड़ सर्दी के कारण हर लघु-शंका के बाद बर्फ़ीले पानी से हाथ धोना और हर महा-शंका के बाद स्नान करना तो यमराज को निमन्त्रण देना होता, इसीलिए बेचारे फूँक-फूँककर ही घुमक्कड़ी कर सकते थे। इसमें किसे उज्र हो सकता है कि शैव हो या वैष्णव, वेदान्ती हो या सदान्ती, सभी को आगे बढ़ाया केवल घुमक्कड़ धर्म ने? बौद्ध धर्मरूपी महान घुमक्कड़ धर्म का भारत से लुप्त होना क्या था, तब से कूप-मंडूकता का हमारे देश में बोलबाला हो गया। सात शताब्दियाँ बीत गयीं, और इन सातों

शताब्दियों में दासता और परतंत्रता हमारे देश में पैर तोड़कर बैठ गयीं, यह कोई आकस्मिक बात नहीं थी। समाज के अगुओं ने चाहे कितना ही कूप-मंडूक बनाना चाहा, लेकिन इस देश में माई के लाल जब-तब पैदा होते रहे, जिन्होंने कर्मपथ की ओर दृष्टिपात किया। हमारे इतिहास में गुरुनानक का समय दूर का नहीं है, लेकिन अपने समय के वह महान घुमक्कड़ थे। उन्होंने भारत-भ्रमण को ही पर्याप्त नहीं समझा और ईरान और अरब तक का धावा मारा।

घुमक्कड़ी किसी बड़े योग से कम सिद्धिदायिनी नहीं है, और निर्भीक तो वह एक नम्बर का बना देती है। घुमक्कड़ नानक मक्के में जाकर काबा की ओर पैर फैलाकर सो गये, मुल्लों में इतनी सहिष्णुता होती तो आदमी होते। उन्होंने एतराज किया और पैर पकड़कर दूसरी ओर करना चाहा। उनको यह देखकर बड़ा अचरज हुआ कि जिस तरफ़ घुमक्कड़ नानक का पैर घूम रहा है, काबा भी उसी ओर चला जा रहा है। यह है चमत्कार! आज के सर्वशक्तिमान, किन्तु कोठरी में बन्द महात्माओं में है कोई ऐसा, जो नानक की तरह हिम्मत और चमत्कार दिखलाए?

दूर शताब्दियों की बात छोड़िए, अभी शताब्दी भी नहीं बीती, इस देश से स्वामी दयानन्द को बिदा हुए। स्वामी दयानन्द को ऋषि दयानन्द किसने बनाया? इसी घुमक्कड़ी धर्म ने। उन्होंने भारत के अधिकांश भागों का भ्रमण किया; पुस्तक लिखते, शास्त्रार्थ करते वह बराबर भ्रमण करते रहे। शास्त्रों को पढ़कर काशी के बड़े-बड़े पंडित महा-महा मंडूक बनने में ही सफल होते रहे, इसलिए दयानन्द को मुक्त बुद्धि और तर्कप्रधान बनाने का कारण शास्त्रों से अलग कहीं ढूँढना होगा। और वह है उनकी निरंतर घुमक्कड़ी धर्म का सेवन। उन्होंने समुद्र-यात्रा करने, द्वीपांतरों में जाने के विरुद्ध

जितनी थोथी दलीलें दी जाती थीं, सबको चिद्दी-चिद्दी उड़ा दिया और बतलाया कि मनुष्य स्थावर-वृक्ष नहीं है, वह जंगम प्राणी है। चलना मनुष्य का धर्म है, जिसने इसे छोड़ा वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है।

बीसवीं शताब्दी के भारतीय घुमक्कड़ी की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं। इतना लिखने से मालूम हो गया होगा कि संसार में यदि कोई अनादि सनातन धर्म है, तो वह घुमक्कड़ धर्म है। लेकिन वह संकुचित संप्रदाय नहीं है, वह आकाश की तरह महान है, समुद्र की तरह विशाल है। जिन धर्मों ने अधिक यश और महिमा प्राप्त की है, वह केवल घुमक्कड़ धर्म ही के कारण। प्रभु ईसा घुमक्कड़ थे, उनके अनुयायी भी ऐसे घुमक्कड़ थे जिन्होंने ईसा के संदेश को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाया। यहूदी पैग़म्बरों ने घुमक्कड़ी धर्म को भुला दिया, जिसका फल शताब्दियों तक उन्हें भोगना पड़ा। उन्होंने अपने जाने, चूल्हे से सिर निकालना नहीं चाहा।

घुमक्कड़ धर्म की ऐसी भारी अवहेलना करनेवाली की जैसी गति होनी चाहिए वैसी गति उनकी हुई। चूल्हा हाथ से छूट गया और सारी दुनिया में घुमक्कड़ी करने को मज़बूर हुए, जिसने आगे उन्हें मारवाड़ी सेठ बनाया; या यों कहिए कि घुमक्कड़ धर्म की एक छींट पड़ जाने से मारवाड़ी सेठ भारत के यहूदी बन गये।

जिसने इस धर्म की अवहेलना की उसे रक्त के आँसू बहाने पड़े। अभी इन बेचारों ने बड़ी कुर्बानी के बाद और दो हज़ार वर्ष की घुमक्कड़ी के तजुर्बे के बल पर फिर अपना स्थान प्राप्त किया। आशा, है, स्थान प्राप्त करने से वह पुनः चूल्हे में सिर रखकर बैठनेवाले नहीं बनेंगे। सनातन धर्म से पतित यहूदी जाति को महान पाप का प्रायश्चित या दंड घुमक्कड़ी के रूप में भोगना पड़ा और अब उन्हें पैर रखने का स्थान मिला है। यह घुमक्कड़ी धर्म ही है, जिसने यहूदियों को केवल व्यापार-कुशल और उद्योग-निष्णात ही नहीं बनाया, बल्कि विज्ञान, दर्शन, साहित्य, संगीत आदि सभी क्षेत्रों में चमकने का मौक़ा दिया। समझा जाता था कि व्यापारी तथा घुमक्कड़ जहूदी युद्ध-विद्या में कच्चे निकलेंगे; लेकिन उन्होंने पाँच-पाँच अरबी साम्राज्यों की सारी शेखी को धूल में मिलाकर चारों खाने चित कर दिया और सबने नाक रगड़कर उनसे शांति की भिक्षा माँगी।

इतना कहने से अब कोई सन्देह नहीं रह गया कि घुमक्कड़ धर्म से बढ़कर दुनिया में धर्म नहीं है। धर्म भी छोटी बात है, उसे घुमक्कड़ के साथ लगाना 'महिमा घटी समुद्र की, रावण बसा पड़ोस' वाली बात होगी। घुमक्कड़ होना आदमी के लिए परम सौभाग्य की बात है। यह पन्थ अपने अनुयायी को मरने के बाद किसी भी काल्पनिक स्वर्ग का प्रलोभन नहीं देता, इसके लिए तो कह सकते हैं– "क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले।"

घुमक्कड़ी वही कर सकता है, जो निश्चिंत है। किन साधनों से संपन्न होकर आदमी घुमक्कड़ बनने का अधिकारी हो सकता है, यह आगे बतलाया जाएगा; किन्तु घुमक्कड़ी के लिए चिंताहीन होना आवश्यक है, और चिन्ताहीन होने के लिए घुमक्कड़ी भी आवश्यक है। दोनों अन्योन्याश्रित होना दूषण नहीं, भूषण है। घुमक्कड़ी से बढ़कर सुख कहाँ मिल सकता? आखिर चिन्ताहीनता सुख का सबसे स्पष्ट रूप है। घुमक्कड़ी में कष्ट भी होते हैं; लेकिन उन्हें उसी तरह समझिए जैसे भोजन में मिर्च। मिर्च में यदि कड़वाहट न हो, तो क्या कोई मिर्च-प्रेमी उसमें हाथ भी लगाएगा? वस्तुतः घुमक्कड़ी में कभी-कभी होनेवाले कड़वे अनुभव उसके रस को और बढ़ा देते हैं, उसी तरह जैसे काली पृष्ठभूमि में चित्र अधिक खिल उठता है।

व्यक्ति के लिए घुमक्कड़ी से बढ़कर कोई नकद धर्म नहीं है। जाति का भविष्य घुमक्कड़ों

पर निर्भर करता है, इसलिए मैं कहूँगा कि हरेक तरुण और तरुणी को घुमक्कड़ व्रत ग्रहण करना चाहिए; इसके विरुद्ध दिये जानेवाले सारे प्रमाणों को झूठ और व्यर्थ का समझना चाहिए। यदि माता-पिता विरोध करते हैं, तो समझना चाहिए कि वह भी प्रह्लाद के माता-पिता के नवीन संस्करण हैं। यदि हित-बांधव बाधा उपस्थित करते हैं, तो समझना चाहिए कि वे दिवांध हैं। यदि धर्माचार्य कुछ उल्टा-सीधा तर्क देते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि इन्हीं ढोंगों और ढोंगियों ने संसार को कभी सरल और सच्चे पथ पर चलने नहीं दिया। यदि राज्य और राजसी नेता अपनी कानूनी रुकावटें डालते हैं, तो हज़ारों बार की तजुर्बा की हुई बात है कि महानदी के वेग की तरह घुमक्कड़ी की गति को रोकनेवाला दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ। बड़े-बड़े कठोर पहरेवाली राज्य-सीमाओं को घुमक्कड़ों ने आँख में धूल झोंककर पार कर दिया। मैंने स्वयं ऐसा एक से अधिक बार किया है। (पहली तिब्बत-यात्रा में अंग्रेज़ों, नेपाल राज्य और तिब्बत के सीमा-रक्षकों की आँख में धूल झोंककर मुझे जाना पड़ा था।)

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि यदि कोई तरुण-तरुणी घुमक्कड़ धर्म की दीक्षा लेता है– यह मैं अवश्य कहूँगा कि यह दीक्षा वही ले सकता है जिसमें बहुत भारी मात्रा में हर तरह का साहस है– तो उसे किसी की बात नहीं सुननी चाहिए, न पिता के भय की और उदास होने की, न भूल से ब्याह लायी अपनी पत्नी के रोने-धोने की फ़िक्र करनी चाहिए और न किसी तरुणी को अपने पति के कलपने की। बस, शंकराचार्य के शब्दों में यही समझना चाहिए-निस्त्रैगुण्ये पथि विचरतः को विधिः को निषेधः? और मेरे गुरु कपोतराज के वचन को अपना पथ-प्रदर्शक बनाना चाहिए–

"सैर कर दुनिया की गाफ़िल, ज़िन्दगानी फिर कहाँ?
ज़िन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ?"

दुनिया में मनुष्य-जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण-तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। कमर बाँध लो भावी घुमक्कडो! संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है!

I. कठिन शब्दार्थ

जिज्ञासा - जानने की इच्छा; घुमक्कड़ - घूमते रहनेवाला; आदिम - आदि (शुरू) में उत्पन्न, सर्वप्रथम; कृतियाँ - रचनाएँ; देवदार - पहाड़ों पर पाया जानेवाला एक तरह का लंबा और सुन्दर वृक्ष; हिममुकुटित - हिम (बर्फ़) का मुकुट पहने हुए; मुल्क - देश; काफ़िला - कारवाँ, यात्रियों का दल; मंगोल - मंगोलिया का निवासी; करामत - चमत्कार; दिग्दर्शक - दिशा का

ज्ञान कराने वाला यंत्र, कुतुबनुमा; कूपमंडूक- कुँए का मेंढक (वह व्यक्ति जिसके ज्ञान की सीमा कुँए के सीमित क्षेत्र में रहनेवाले मेंढक की तरह संकुचित हो।); बृहत्तर भारत - विशाल भारत; खारा - नमकीन; पुतली - मूर्ति; दुराना - दूर रखना, तिरस्कार या उपेक्षा दिखाना; ऐरे-गैरे - तुच्छ; शास्त्र-बाह्य - शास्त्र से बाहर का; जम्बू वृक्ष - जामुन का पेड़; वर्जन - मनाही; करतल भिक्षा तरुतलवास - अपने हाथ से भिक्षा माँगकर पेड़ के नीचे निवास करना; दिग्अम्बर - दिशा रूपी वस्त्र; श्वेताम्बर - श्वेत वस्त्र धारण करनेवाले जैन साधु; वैशालिक - जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर, जिनका जन्म वैशाली में हुआ था; दम्भी - घमंडी; मुल्म्मेवाले - नकली, ढोंगी; खाक छानना - किसी चीज़ की तलाश में मारे-मारे फिरना; भाष्य - किसी ग्रंथ की व्याख्या; चार धाम - चारों दिशाओं में स्थित चार प्रमुख तीर्थ (पूर्व में पूरी, पश्चिम में द्वारका, उत्तर में बद्रीनाथ और दक्षिण में रामेश्वरम); धूनी रमाना - डेरा डालना;

II. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

सदा विचरण करना, कोलहू का बैल होना, दिशा बदलना, अकल न आना, धूल में मिलाना, नाक रगड़ना, रक्त के आँसू बहाना, अन्योन्या श्रित होना, खिल उठना, आँखों में धूल झोंकना, अवसर से हाथ धोना

III. एक या दो वाकयों में उत्तर दीजिए:-

1. घुमक्कड़ जिज्ञासा पाठ के लेखक का नाम क्या है?
2. राहुल साकृत्यायन ने घुमक्कड़ जिज्ञासा पाठ में क्या बताया है?
3. जिज्ञासा किस प्रकर की चीज के लिए होनी चाहिए?
4. लेखक के अनुसार दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु क्या है?
5. आधुनिक विज्ञान में किसका स्थान ऊँचा है?
6. पुस्तकीय ज्ञान और घुमक्कड़ी ज्ञान में अंतर क्या है?
7. किन घुमक्कडों ने पश्चिमी देशों के आगे बढ़ने का रास्ता खोला?
8. आदिम घुमक्कड़ कौन-कौन थे?
9. आदि काल में भारतीय घुमक्कड़ कहाँ-कहाँ गये थे?

10. घुमक्कड़ धर्म के भूलने का नतीजा क्या हुआ?

11. संसार में चारों फलों के भागी कौन हुए?

12. भारत के घुमक्कड धर्माचार्य कौन-कौन थे?

13. क्या स्त्रियाँ भी घुमक्कड़ी कर सकती है?

14. महावीर का जन्म कहाँ हुआ और मत्यु कहा हुई?

15. प्रथम श्रेणी के घुमक्कड़ कौन थे?

16. शंकर को शंकर किस धर्म ने बनाया?

17. घुमक्कड़ धर्म की दीक्षा कौन ले सकता है?

IV. विस्तृत उत्तर लिखिएः-

1. लेखक ने दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु किसे और क्यों माना?

2. घुमक्कड़ धर्म से विमुख होने के दुष्परिणाम क्या-क्या है?

3. धर्माचारियों ने घुमक्कड़ धर्म को क्यों अपनाया? भारत के महान घुमक्कड़ों का विवरण दीजिए।

4. घुमक्कड़ी कौन-कर सकता है - पाठ के अधार पर स्पष्ट कीजिएः-

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः-

1. जाड़े में यदि इस जगह था, तो गर्मियों में वहाँ से दो सौ कोस दूर।

2. खेती, बाग़वानी तथा घर-द्वार से मुक्त वह आकाश के पक्षियों की भाँति पृथ्वी पर सदा विचरण करता था, जाड़े में यदि इस जगह था, तो गर्मियों में वहाँ से दो सौ कोस दूर।

3. उसने प्राणियों की उत्पत्ति और मानव वंश के विकास पर ही अद्वितीय खोज नहीं की, बल्कि सारे विज्ञानों को उससे सहायता मिली।

4. चीन और भारत को सभ्यता का बड़ा गर्व है, लेकिन इनको इतना अक़्ल नहीं आयी कि

जाकर वहाँ अपना झंडा गाड़ आते।

5. यदि वह जन्म सफल करके व्यक्ति और समाज के लिए कुछ करना चाहती हैं, तो उन्हें भी दोनों हाथों इस धर्म को स्वीकार करना चाहिए।

6. दूर शताब्दियों की बात छोड़िए, अभी शताब्दी भी नहीं बीती, इस देश से स्वामी दयानन्द को बिदा हुए। स्वामी दयानन्द को ऋषि दयानन्द किसने बनाया?

7. शैव हो या वैष्णव वेदांती हो या सदांती सभी को आगे बढ़ाया केवल घुमक्कड़ धर्म ने।

8. परतंत्र हमारे देश में पैर तोड़कर बैठ गयी। यह कोई आकस्मिक बात नहीं थी।

9. जिसने इस धर्म की अवहेलना की उसे रक्त के आँसू बहाने पड़े।